नन्दिसूत्र (फोल्डर नंबर ००१२४६)

मुख्य टाइटल

समर्पण ---------- ५
प्रकाशकीय ---------- ७
श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर ---------- ८
श्रीमान् सेठ एस. रतनचन्दजी चोरड़िया, मद्रास जीवन परिचय ---------- ९
आदि वचन ---------- ११
सम्पादकीय ---------- १५
प्रस्तावना ---------- १७
विषयानुक्रम ---------- ३१
अर्हत्स्तुति ---------- ३
महावीरस्तुति---------- ४
संघ-नगर-स्तुति ---------- ४
संघ-चक्र की स्तुति---------- ५
संघ-रथ की स्तुति ---------- ५
संघ-पद्म की स्तुति ---------- ६
संघ-चन्द्र की स्तुति ---------- ६
संघ-सूर्य की स्तुति ---------- ७
संघ-समुद्र की स्तुति ---------- ७
संघ-महामन्दर-स्तुति ---------- ८
अन्य प्रकार से संघमेरु की स्तुति ---------- १०
संघस्तुति विषयक उपसंहार ---------- १०
चतुर्विंशति-जिनस्तुति ---------- १०
गणधरावली ---------- ११
वीरशासन की महिमा ---------- १२
युगप्रधान स्थविरावलिका-वंदन ---------- १२
श्रोताओं के विविध प्रकार ---------- १७
परिषद् के तीन प्रकार ---------- २२
ज्ञान के पांच प्रकार ---------- २४
प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रमाण ---------- २६
प्रत्यक्ष के भेद ---------- २७
सांव्यावहारिक प्रत्यक्ष के प्रकार ---------- २८
पारमार्थिक प्रत्यक्ष के तीन भेद ---------- २९
अवधिज्ञान के छह भेद ---------- ३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आनुगामिक अवधिज्ञान -- ३१
अन्तगत और मध्यगत में विशेषता -- ३३
अनानुगामिक अवधिज्ञान -- ३४
वर्द्धमान अवधिज्ञान -- ३५
अवधिज्ञान का जगन्य क्षेत्र -- ३५
अवधिज्ञान का उत्कृष्ट क्षेत्र -- ३६
अवधिज्ञान का मध्यम क्षेत्र -- ३७
हीयमान अवधिज्ञान -- ३९
प्रतिपाति अवधिज्ञान --- ४०
अप्रतिपाति अवधिज्ञान --- ४०
द्रव्यादिक्रम से अवधिज्ञान निरूपण --- ४१
अवधिज्ञान विषयक उपसंहार -- ४२
अबाह्य-बाह्य अवधइज्ञान --- ४२
मनःपर्यवज्ञान -- ४३
मनःपर्यायज्ञान के भेद -- ४९
ऋजुमति और विपुलमति में अन्तर --- ५१
अवधि और मनःपर्यवज्ञान में अन्तर -- ५१
मनःपर्यवज्ञान का उपसंहार -- ५२
केवलज्ञान --- ५२
सिद्धकेवलज्ञान --- ५५
सत्पदप्ररूपणा -- ५५
द्रव्यद्वार -- ५७
क्षेत्रद्वार -- ५८
स्पर्शनाद्वार --- ५८
कालद्वार -- ५९
अन्तरद्वार --- ६०
भावद्वार --- ६१
अल्पबहुत्वद्वार -- ६१
अनन्तरसिद्ध-केवलज्ञान --- ६२
परम्परसिद्ध-केवलज्ञान -- ६४
युगपद् उपयोगवाद -- ६५
एकान्तर उपयोगवाद -- ६६
अभिन्न उपयोगवाद -- ६७
केवलज्ञान का उपसंहार -- ६८
वाग्योग और श्रुत -- ६९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परोक्ष ज्ञान ---------- ७०
मति और श्रुत के दो रूप ---------- ७१
आभिनिबोधिक ज्ञान के भेद ---------- ७२
औत्पत्तिकी बुद्धि का लक्षण ---------- ७२
औत्पत्तिकी बुद्धि के उदाहरण ---------- ७३
वैनयिकी बुद्धि का लक्षण ---------- ९५
वैनयिकी बुद्धि के उदाहरण ---------- ९५
कर्मजाबुद्धि-लक्षण और उदाहरण ---------- १०२
पारिणामिकी बुद्धि का लक्षण ---------- १०४
पारिणामिकी बुद्धि के उदाहरण ---------- १०४
श्रुतनिश्रित मतिज्ञान---------- १२६
अवग्रह ---------- १२८
ईहा ----------१३१
अवाय ---------- १३२
धारणा ---------- १३२
अवग्रह आदि का काल ---------- १३४
व्यंजनावग्रह-प्रतिबोधक-दृष्टान्त ---------- १३५
मल्लकदृष्टान्त से व्यंजनावग्रह ---------- १३६
अवग्रहादि के छह उदाहरण ---------- १३८
मतिज्ञान का विषयवर्णन ---------- १४२
आभिनिबोधिक ज्ञान का उपसंहार ---------- १४३
श्रुतज्ञान ---------- १४६
अक्षरश्रुत ---------- १४६
अनक्षरश्रुत ---------- १४७
संज्ञि-असंज्ञिश्रुत ---------- १४९
सम्यक्श्रुत ---------- १५२
मिथ्याश्रुत ---------- १५५
सादि सान्त अनादि अनन्तश्रुत ---------- १५७
गमिक-अगमिक, अंगप्रविष्ट-अंगबाह्यश्रुत ---------- १६०
अंगप्रविष्ट श्रुत ---------- १६५
द्वादशांगी गणिपिटक ---------- १६६
आचारांग के अन्तर्वर्त्ती विषय ---------- १७०
सूत्रकृतांग ---------- १७२
स्थानांग ---------- १७५
समवायांग ---------- १७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्याख्याप्रज्ञप्ति ---------- १७९
ज्ञाताधर्मकथा ---------- १८०
उपासकदशांग ---------- १८२
अन्तकृद्दशांग ---------- १८३
अनुत्तरौपपातिकदशा ---------- १८५
प्रश्नव्याकरण ---------- १८६
प्रश्नव्याकरण के विषय में दिगंबरमान्यता ---------- १८८
विपाकसूत्र ---------- १८९
दृष्टिवादश्रुत ---------- १९०
परिकर्म ---------- १९१
सिद्धश्रेणिका परिकर्म ---------- १९२
मनुष्यश्रेणिका परिकर्म ---------- १९२
पृष्टश्रेणिका परिकर्म ---------- १९३
अवगाढश्रेणिका परिकर्म ---------- १९३
उपसम्पादनश्रेणिका परिकर्म ---------- १९४
विप्रजहत्श्रेणिका परिकर्म ---------- १९४
च्युताच्युतश्रेणिका परिकर्म ---------- १९५
सूत्र ---------- १९६
पूर्व ---------- १९७
अनुयोग ---------- १९८
चूलिका ---------- २००
दृष्टिवाद का उपसंहार ---------- २०१
द्वादशांग का संक्षिप्त सारांश ---------- २०२
द्वादशांग की आराधना का सुफल ---------- २०३
गणिपिटक की शाश्वतता ---------- २०४
श्रुतज्ञान के भेद और पठनविधि ---------- २०६
व्याख्या करने की विधि ---------- २०७
श्रुतज्ञान किसे दिया जाय ---------- २०८
बुद्धि के आठ गुण ---------- २०८
परिशिष्ट ---------- २११
अनध्यायकाल ---------- २१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org